

हनुमान अष्टक (संकट मोचन नाम तिहारों)

बाल समय रवि भक्षि लियो तब,
तिनहुं लोक भयो अंधियारो ।
ताहि सो त्रास भयो जग मे,
यह संकट काहु से जात न टारो ॥
देवन आनि करी विनती तब,
छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै,
गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब,
चाहिए कौन विचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के शोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥२॥

अंगद के संग लेन गये सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौं हम सों जु,
बिन सुध लाए इहां पगुधारो ॥
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब,
लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥३॥

रावन त्रास दई सिय को तब,
राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु,
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥४॥

बाण लग्यो उर लछिमन के तब,
प्राण तज्यो सुत रावन मारो ।
लै गृह वैध्य सुषेण समेत,
तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्राण उबारो ।
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥५॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब,
नाग की फांस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु,
बन्धन काटि सुत्रास निवारो ॥
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥६॥

बन्धु समेत जबै अहिरावण,
लै रघुनाथ पाताल सिधारो ।
देवहिं पूजि भली विधि सों,
बलि देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो ।
जाय सहाय भये तब ही,
अहिरावण सैन्य समेत संहारो ॥
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥७॥

काज किये बड़ देवन के तुम,
वीर महाप्रभु देखि विचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसो नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो ॥
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥८॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कापिशुर ॥